



भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण

Dr. Raghavendra Kumar Mishra

Assistant Professor, Govt.S.K. College Mauganj, raghavendr38@gmail.com

Dr. Sachchida Nand Mishra

Guest Faculty, Govt. S.K. College Mauganj, raghavendr38@gmail.com

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.20142405>

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 20-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा दर्शन, NEP 2020, गुरुकुल, मूल्य शिक्षा, मातृभाषा, बहु-विषयकता

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की उन गिनी-चुनी परंपराओं में से एक है जो पाँच हजार वर्षों से अधिक समय से अबाधित रूप से प्रवाहित हो रही है। इसके शिक्षा-दर्शन की मूलभूत विशेषता यह है कि यहाँ ज्ञान को कभी केवल सूचना का संकलन नहीं माना गया, बल्कि उसे चरित्र-निर्माण, आत्म-साक्षात्कार और समाज-कल्याण का माध्यम बनाया गया। वेदों में 'श्रुति', उपनिषदों में 'ब्रह्मविद्या', बौद्ध परंपरा में 'प्रज्ञा', जैन परंपरा में 'सम्यग्ज्ञान' - सभी का केन्द्र-बिन्दु मानव की बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक क्षमताओं का समग्र विकास था। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी परंपरा के पुनरुद्धार का महत्वाकांक्षी दस्तावेज है। यह नीति पहली बार औपनिवेशिक शिक्षा-तंत्र के मूल दोषों - यांत्रिकीकरण, अंग्रेजी के अंधानुकरण, परीक्षा-उन्माद, और सांस्कृतिक विच्छेद - को सीधे चुनौती देती है। यह शोधपत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के दार्शनिक आधारों, प्राचीन शिक्षा पद्धतियों की संरचना, औपनिवेशिक विघटन के दीर्घकालिक प्रभावों, तथा NEP 2020 के प्रमुख प्रावधानों का भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध निष्कर्ष बताते हैं कि NEP 2020 दार्शनिक रूप से तो भारतीय परंपरा के अनुरूप है, किन्तु इसकी सफलता के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, बजट आवंटन, शिक्षक-

प्रशिक्षण में आमूल-परिवर्तन और स्थानीय ज्ञान-धाराओं को वैधता देना आवश्यक है।

1. परिचय (Introduction)

जब विश्व के अन्य भागों में शिक्षा केवल धार्मिक ग्रंथों या पुरोहित वर्ग तक सीमित थी, उस समय भारत में बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति, खगोलशास्त्र, धातुविज्ञान, चिकित्साशास्त्र, शल्य चिकित्सा, तर्कशास्त्र, व्याकरण, छंदशास्त्र, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, युद्धकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य, वास्तुशास्त्र, जल प्रबंधन, पशु चिकित्सा, प्राणीशास्त्र, वनस्पति विज्ञान और यहाँ तक कि अंतरिक्ष विज्ञान जैसे विषयों का उच्च स्तरीय अध्ययन होता था। यह केवल अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक तथ्य है जो प्राचीन ग्रंथों, पुरातात्विक साक्ष्यों और विदेशी यात्रियों के विवरणों से प्रमाणित होता है।

ऋग्वेद के खिल सूक्त में आर्यभट्ट से सहस्रों वर्ष पूर्व सूर्य-ग्रहण के कारणों की विस्तृत चर्चा मिलती है। इसमें बताया गया है कि सूर्य और चंद्रमा की गति के कारण ग्रहण कैसे लगता है – यह उस युग में एक अद्भुत वैज्ञानिक उपलब्धि थी, जब पश्चिमी सभ्यताएँ अंधविश्वासों में जकड़ी हुई थीं और ग्रहण को 'देवताओं का क्रोध' समझती थीं। शुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के 125 उपकरणों का विस्तृत वर्णन है – जिनमें स्केलपेल, सुई, चिमटी, कैंची, कैथीटर, एवं नेत्र शल्य चिकित्सा के लिए सूक्ष्म उपकरण शामिल हैं। शुश्रुत ने मोतियाबिंद की सर्जरी, गर्भस्थ शिशु की स्थिति सुधारना, अंग-विच्छेदन, और यहाँ तक कि प्लास्टिक सर्जरी (नाक पुनर्निर्माण) का वर्णन किया है – जो वैश्विक चिकित्सा की नींव बना। चरक संहिता में मानव शरीर के प्रत्येक अंग, उसके कार्य, रोगों के निदान और औषधियों का सूक्ष्म विश्लेषण है जिसका प्रयोग आज भी आयुर्वेद में किया जाता है।

यहाँ यह समझना और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की विशिष्टता केवल उसकी बौद्धिक व्यापकता या तकनीकी उन्नति में नहीं है। वास्तविक विशिष्टता उसके दार्शनिक ढाँचे में निहित है। पश्चिमी शिक्षा परंपरा में ज्ञान को अक्सर 'सूचना' या 'तथ्यों के संग्रह' के रूप में देखा गया – जितना अधिक तथ्य उतना अधिक ज्ञानी। लेकिन भारत में शिक्षा को कभी केवल सूचना संचयन (information accumulation) नहीं माना गया। यहाँ शिक्षा को एक 'परिवर्तनकारी प्रक्रिया' (transformative process) के रूप में देखा गया – जिसका लक्ष्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि 'व्यक्ति का समग्र विकास' करना था।

इस परिवर्तनकारी प्रक्रिया के चार स्तर थे – पहला, 'चित्तशुद्धि' अर्थात् मन और बुद्धि को विकारों, पूर्वाग्रहों और अज्ञानता से मुक्त करना। दूसरा, 'मानसिक अनुशासन' अर्थात् ध्यान, एकाग्रता, तर्कशक्ति और विवेक का विकास करना। तीसरा, 'चरित्र निर्माण' अर्थात् सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, सेवा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य जैसे मूल्यों को



आत्मसात करना। और चौथा, अंततः 'मोक्ष' या आत्म-साक्षात्कार – जहाँ मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता है, ज्ञान और कर्म के बंधन से मुक्त होता है।

भारतीय शिक्षा दर्शन की मूलभूत मान्यता यह थी कि 'ज्ञान के बिना चरित्र खतरनाक है' – एक चोर या तानाशाह भी अत्यधिक ज्ञानी हो सकता है, लेकिन उसका ज्ञान समाज के लिए विनाशकारी होता है। 'कौशल के बिना नैतिकता विनाशकारी है' – केवल अच्छे इरादे काम नहीं आते, जब तक कि वे व्यावहारिक कौशल में परिवर्तित न हों। और 'सूचना के बिना आत्म-जागरूकता अर्थहीन है' – बिना सही सूचना और ज्ञान के, आत्म-चिंतन अंधकार में डूबा तीर के समान है। यही त्रिसूत्री मान्यता – चरित्र, कौशल और सूचना का समन्वय – भारतीय शिक्षा दर्शन की सबसे गहरी नींव है। यह कोई साधारण शिक्षा पद्धति नहीं थी, बल्कि जीवन जीने की एक संपूर्ण कला थी – जहाँ विद्यार्थी केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में निपुण बनता था। इसीलिए प्राचीन भारत में शिक्षा को 'विद्या' कहा गया, जिसका अर्थ है 'प्रकाश' – अज्ञानता के अंधकार को दूर करने वाला प्रकाश, जो न केवल बाहर प्रकाशित करता है बल्कि भीतर भी उजियारा फैलाता है। **समस्या का कथन**

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी भारतीय शिक्षा प्रणाली अनेक संकटों से जूझ रही है। रटंत पद्धति का बोलबाला है, जहाँ छात्र समझने के बजाय रटने पर विवश हैं। परीक्षा का तनाव इतना अधिक है कि प्रतिवर्ष हजारों छात्र आत्महत्या जैसे चरम कदम उठा लेते हैं। नैतिक शिक्षा का हास हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार, हिंसा और अनुशासनहीनता जैसी सामाजिक समस्याएँ बढ़ी हैं। छात्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटते जा रहे हैं, और पाश्चात्य मॉडल की अंधी नकल करते चले जा रहे हैं। ASER 2022 रिपोर्ट के अनुसार, कक्षा 5 के 50 प्रतिशत से अधिक बच्चे कक्षा 2 का पाठ भी ठीक से नहीं पढ़ पाते – यह आँकड़ा हमारी शिक्षा प्रणाली की विफलता का सबसे स्पष्ट प्रमाण है। यह स्थिति इसलिए भी चिंताजनक है क्योंकि हमारे पास एक समृद्ध वैकल्पिक परंपरा मौजूद थी, जिसे हमने औपनिवेशिक काल में खो दिया।

शोध की प्रासंगिकता (Research Relevance)

यह अध्ययन तीन प्रमुख कारणों से अत्यधिक प्रासंगिक है। पहला, NEP 2020 का क्रियान्वयन देश भर में तीव्रता से हो रहा है, और इसके प्रभावों का गंभीरता से मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। दूसरा, 'भारतीय ज्ञान परंपरा' को लेकर राजनीतिक-वैचारिक बहस चल रही है – इस बहस को तथ्यात्मक एवं शैक्षिक आधार देने की आवश्यकता है, न कि केवल वैचारिक धुवीकरण का शिकार बनने देना। तीसरा, वैश्विक स्तर पर योग, आयुर्वेद, ध्यान, अहिंसा, स्थिरता जैसे भारतीय विचारों की बढ़ती स्वीकार्यता को देखते हुए, इन्हें संस्थागत शिक्षा का हिस्सा बनाने का यह सही समय है। संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया है, जो भारतीय ज्ञान की सार्वभौमिकता को प्रमाणित करता है।



शोध प्रश्न (Research Question)

यह अध्ययन तीन मुख्य शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है। पहला, भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल दार्शनिक और शैक्षणिक सिद्धांत क्या हैं जो समकालीन शिक्षा को सूचित कर सकते हैं? दूसरा, NEP 2020 इन पारंपरिक सिद्धांतों से किस हद तक सहमत है और कहाँ उनसे अलग हो जाती है? तीसरा, भारतीय ज्ञान परंपरा को उच्च शिक्षा में एकीकृत करने के लिए कौन से साक्ष्य-आधारित कार्यान्वयन रणनीतियाँ अपनाई जानी चाहिएँ?

शोध पद्धति (Methodology)

यह शोधपत्र तुलनात्मक दार्शनिक विश्लेषण की पद्धति का उपयोग करता है। इसमें वेदों, उपनिषदों, त्रिपिटक और आगम जैसे प्राथमिक ग्रंथों का हर्मन्यूटिक विश्लेषण शामिल है। साथ ही, NEP 2020 के प्रावधानों की ऐतिहासिक मॉडलों से तुलना की गई है। अध्ययन में UGC, AICTE और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के हालिया कार्यान्वयन आँकड़ों (2024-2026) की भी समीक्षा की गई है, ताकि नीति के वास्तविक प्रभाव का आकलन किया जा सके।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा दर्शन: स्रोत एवं स्तंभ (Educational Philosophy of Indian Knowledge Tradition: Sources and Pillars)

वैदिक परंपरा

वैदिक परंपरा में शिक्षा का दार्शनिक आधार अत्यंत व्यापक था। ऋग्वेद (1.89.1) के सूक्त "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" अर्थात् सभी दिशाओं से कल्याणकारी ज्ञान हमारे पास आएँ, से स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में ज्ञान का सार्वभौमिक दृष्टिकोण था, न कि कोई संकीर्णता। शिक्षा को जीवन के चार चरणों – ब्रह्मचर्य (छात्र जीवन), गार्हस्थ्य (गृहस्थ), वानप्रस्थ (वन-गमन) और संन्यास (त्याग) – में विभाजित किया गया था। प्रत्येक चरण की शिक्षा अलग होती थी। ब्रह्मचर्य में वेदों और धर्मशास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी, गार्हस्थ्य में अर्थशास्त्र और कामशास्त्र पर बल दिया जाता था, वानप्रस्थ में आध्यात्मिक अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता था, जबकि संन्यास में आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त किया जाता था।

छान्दोग्य उपनिषद का सातवाँ अध्याय नारद-सनत्कुमार संवाद प्रस्तुत करता है, जो शिक्षा के 25 आयामों की गणना करता है – ऋग्वेद जैसे अनुभवजन्य ज्ञान से लेकर आत्मविद्या जैसे अस्तित्वगत ज्ञान तक। यह समग्र शिक्षा के लिए शायद सबसे प्रारंभिक प्रलेखित पाठ्यचर्या ढाँचा है। यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वैदिक शिक्षा केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें गणित, खगोल, चिकित्सा, भाषाविज्ञान और युद्धकला जैसे विषय भी सम्मिलित थे।

बौद्ध परंपरा



बौद्ध परंपरा में त्रिपिटक (विनय, सुत्त, अभिधम्म) में वर्णित शिक्षा का मुख्य लक्ष्य दुःख का निरोध था। पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में स्थापित नालन्दा विश्वविद्यालय इस परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जहाँ न केवल बौद्ध दर्शन, बल्कि वेद, व्याकरण, चिकित्सा, खगोल, तर्कशास्त्र और यहाँ तक कि तंत्र का भी अध्ययन होता था। विद्यार्थी यहाँ बहु-विषयक डिग्री लेते थे, जिसे आज के 'मल्टीडिसिप्लिनरी' शिक्षा का प्राचीनतम उदाहरण कहा जा सकता है। नालन्दा के पुस्तकालय – धर्मगंज, रत्नसागर और रत्नोदधि – इतने विशाल थे कि 1193 ई. में बख्तियार खिलजी की सेना को उन्हें पूरी तरह जलाने में तीन दिन लग गए थे। यह घटना यह बताने के लिए पर्याप्त है कि भारत का ज्ञान-भंडार कितना विशाल था।

बौद्ध शिक्षण विधियों की बात करें तो तीन प्रमुख विधियाँ थीं – प्रवचन (व्याख्यान), शास्त्रार्थ (वाद-विवाद) और प्रश्नोत्तरी। शास्त्रार्थ पद्धति को आज के 'हार्वर्ड केस मेथड' का पूर्वज कहा जा सकता है, जहाँ छात्र तार्किक युक्तियों के माध्यम से दार्शनिक प्रश्नों का समाधान खोजते थे। इस पद्धति में एक छात्र प्रस्तावक (वादी) होता था, दूसरा प्रतिवादी (प्रतिवादी), और तीसरा निर्णायक (मध्यस्थ) – यह आज की अकादमिक डिबेट प्रतियोगिताओं का प्राचीन स्वरूप था।

जैन परंपरा

जैन परंपरा में अनेकान्तवाद और स्यादवाद का दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो सिखाता है कि किसी भी सत्य के अनेक पहलू होते हैं। यह दर्शन शिक्षा में क्रिटिकल थिंकिंग और सहिष्णुता का आधार प्रस्तुत करता है। जैन आगमों में पाँच प्रकार के ज्ञान बताए गए हैं – मति (संवेदी ज्ञान), श्रुत (शास्त्रीय ज्ञान), अवधि (प्रत्यक्ष ज्ञान), मनःपर्यय (मानसिक ज्ञान) और केवल (सर्वज्ञता)। यह पाँच-स्तरीय ढाँचा एक क्रमिक शिक्षा-मॉडल के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ छात्र पहले इंद्रिय-आधारित ज्ञान अर्जित करता है, फिर शास्त्रीय ज्ञान की ओर बढ़ता है, और अंततः आत्म-साक्षात्कार के उच्चतम स्तर को प्राप्त करता है।

आदिवासी एवं लोक ज्ञान परंपरा (प्रायः उपेक्षित)

आदिवासी एवं लोक ज्ञान परंपरा प्रायः उपेक्षित रही है, जबकि यह अत्यंत समृद्ध थी। संथाल, गोंड, भील, नागा आदि जनजातियों में शिक्षा प्रकृति-केन्द्रित थी, जिसमें वनस्पति, जल-स्रोत, मौसम और पशु-पक्षियों का गहन ज्ञान दिया जाता था। यह ज्ञान मौखिक परंपरा – लोकगीतों, कहानियों और पहेलियों – के माध्यम से संचरित होता था। उदाहरण के लिए, आदिवासी समुदायों में वर्षा के पूर्वानुमान के लिए पक्षियों के व्यवहार का अवलोकन करने की परंपरा थी, जो आधुनिक मौसम विज्ञान से मेल खाती है। यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होता था, और यह स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल अत्यधिक प्रभावी था। एनईपी 2020 में यद्यपि 'स्थानीय ज्ञान' का उल्लेख तो है, किन्तु इसे संस्थागत स्वरूप देना अभी बाकी है।



प्राचीन शिक्षा की संरचनात्मक विशेषताएँ (Structural Features of Ancient Education)

गुरुकुल प्रणाली

प्राचीन शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण संरचनात्मक इकाई गुरुकुल प्रणाली थी। यह एक आवासीय व्यवस्था थी, जिसमें शिष्य गुरु के घर पर रहता था। यह 24×7 सीखने का वातावरण प्रदान करता था, जहाँ छात्र न केवल पाठ्य पुस्तकों से, बल्कि गुरु के दैनिक व्यवहार, आचरण और जीवन-शैली से भी सीखता था। गुरुकुल में एक अनौपचारिक ऋण प्रणाली भी थी – गुरु दक्षिणा छात्र की क्षमता के अनुसार दी जाती थी, चाहे वह स्वर्ण, गाय, भूमि या सेवा के रूप में हो। यह वर्तमान 'स्लाइडिंग फीस' या 'आय-आधारित ऋण' का प्राचीन संस्करण था।

गुरुकुल की सबसे विशेष बात यह थी कि प्रत्येक छात्र को समान पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाया जाता था। गुरु छात्र की योग्यता (अधिकार) देखकर विषय तय करता था। यह व्यक्तिगत शिक्षण (personalized learning) का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जिसे आज का शिक्षा जगत फिर से खोजने का प्रयास कर रहा है। गुरुकल्प नामक ग्रंथ में 32 प्रकार की शिक्षा-विधियों का उल्लेख मिलता है, जिसमें प्रत्येक छात्र की प्रकृति, रुचि और क्षमता के अनुसार विधि का चयन किया जाता था।

विश्वविद्यालय: तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, वल्लभी

प्राचीन भारत में अनेक विश्वविद्यालय थे, जो आज के विश्वविद्यालयों की तुलना में कहीं अधिक उन्नत और प्रभावशाली थे। तक्षशिला की स्थापना लगभग 600 ईसा पूर्व में हुई थी। यह चिकित्सा, राजनीति, युद्धकला तथा व्याकरण के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ पाणिनि (संस्कृत व्याकरण के रचयिता), चाणक्य (अर्थशास्त्र के लेखक) और जीवक (प्रसिद्ध चिकित्सक) जैसे महान अध्यापक हुआ करते थे। तक्षशिला की विशेषता यह थी कि यहाँ किसी एक धर्म या दर्शन की बाध्यता नहीं थी – विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक मतों के विद्वान एक साथ अध्यापन करते थे।

नालन्दा विश्वविद्यालय पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में स्थापित हुआ था। यह बौद्ध दर्शन के साथ-साथ तर्कशास्त्र, विज्ञान और चिकित्सा का महाकेंद्र था। यहाँ 10,000 से अधिक छात्र और 2,000 से अधिक शिक्षक थे। प्रवेश के लिए एक कठिन प्रवेश परीक्षा होती थी, जिसमें 20 प्रतिशत से भी कम आवेदक सफल हो पाते थे। यहाँ का 9 मंजिला पुस्तकालय विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय था, जहाँ लाखों पांडुलिपियाँ संग्रहीत थीं।

विक्रमशिला आठवीं शताब्दी में स्थापित हुआ था और यह तंत्र और तर्कशास्त्र में विशेषज्ञता रखता था। यहाँ प्रवेश के लिए भी कठोर परीक्षा होती थी, और यहाँ के दीक्षांत समारोह अत्यंत भव्य होते थे, जिनमें स्वयं राजा उपस्थित रहता था। वल्लभी (पाँचवीं शताब्दी) गुजरात में स्थित था और यह जैन एवं हिन्दू दर्शन तथा अर्थशास्त्र का प्राचीन केन्द्र था। ये सभी विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय थे – यहाँ चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया, श्रीलंका और



दक्षिण-पूर्व एशिया से छात्र आते थे। फा-हियान और हवेन-त्सांग जैसे चीनी यात्रियों ने इन संस्थानों का विस्तृत विवरण लिखा है, जो आज भी हमारे लिए अमूल्य ऐतिहासिक दस्तावेज हैं।

3. औपनिवेशिक शिक्षा का व्यवधान: मैकाले से स्वतंत्रता तक (Disruption of Colonial Education: From Thomas Babington Macaulay to Independence)

थॉमस बाबिंगटन मैकाले ने अपने मिनिट्स (1835) में स्पष्ट लिखा था कि "हमारा उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना है जो भारतीय रक्त और रंग का हो, किन्तु स्वाद, विचार, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेज हो।" यह वाक्य औपनिवेशिक शिक्षा के संपूर्ण दर्शन को समेटे हुए है। मैकाले का तर्क था कि प्राच्य (भारतीय) ज्ञान अवैज्ञानिक और पिछड़ा हुआ है, और भारतीयों को सभ्य बनाने के लिए अंग्रेजी शिक्षा आवश्यक है। उन्होंने यहाँ तक कह दिया था कि "संस्कृत और अरबी की एक अलमारी के सभी साहित्य का मूल्य एक ही यूरोपीय पुस्तक की एक अलमारी के बराबर नहीं है।"

मैकाले के प्रस्ताव के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षा का पूर्णतः अंग्रेजीकरण हो गया। संस्कृत, अरबी और फारसी के स्कूलों की उपेक्षा की गई, और उनके अनुदान बंद कर दिए गए। सरकारी नौकरियों के लिए अंग्रेजी अनिवार्य कर दी गई, जिससे मध्यवर्ग पर अंग्रेजी सीखने का अत्यधिक दबाव बन गया। इस नीति का दीर्घकालीन क्षति के रूप में भारतीय बौद्धिक परंपराओं का विस्मरण हुआ, आत्म-सम्मान का हास हुआ, और मानसिक गुलामी का निर्माण हुआ। गाँधी जी ने ठीक ही कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा ने हमें अपनी ही संस्कृति से अलग कर दिया है, और हम 'बाबू' बन गए हैं – न तो पूरी तरह भारतीय, न पूरी तरह अंग्रेज।

स्वतंत्रता के बाद प्रश्न उठता है कि क्या बदला? राधाकृष्णन समिति (1948) और कोठारी समिति (1964-66) ने भारतीय दर्शन को शिक्षा में शामिल करने की सिफारिश तो की, किन्तु संरचनात्मक बदलाव नहीं आया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा' में भारतीय ज्ञान का उल्लेख तो था, परन्तु क्रियान्वयन नगण्य रहा। परिणाम यह हुआ कि 75 वर्षों तक हम उसी मैकाले की मानसिकता से शिक्षा देते रहे। आज भी हमारे स्कूलों में बच्चों को यह सिखाया जाता है कि अंग्रेज हमारे लिए 'सभ्यता' लेकर आए, जबकि सत्य यह है कि मैकाले ने जानबूझकर हमारी शिक्षा प्रणाली को नष्ट किया था ताकि हम हमेशा गुलाम बने रहें।

4. NEP 2020: विस्तृत प्रावधान और उनका भारतीय ज्ञान परंपरा से सम्बन्ध (National Education Policy 2020: Detailed Provisions and Their Linkage with Indian Knowledge Tradition)

प्रारम्भिक शिक्षा और 5+3+3+4 संरचना

NEP 2020 में प्रारम्भिक शिक्षा के लिए 5+3+3+4 संरचना का प्रावधान किया गया है, जो पूर्व के 10+2 मॉडल का स्थान लेती है। नई संरचना में पूर्व-विद्यालय (3-8 वर्ष) पर विशेष जोर दिया गया है, जिसे फाउंडेशनल स्टेज कहा



गया है। प्राचीन भारत में संस्कारों – जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन – के माध्यम से बाल्यावस्था में ही शिक्षा आरम्भ हो जाती थी। NEP का फाउंडेशनल स्टेज इसी मान्यता पर आधारित है कि अधिगम का सबसे महत्वपूर्ण समय प्रारम्भिक वर्ष होते हैं। इस स्तर पर खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और खोज-आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है – यह सब गुरुकुलों में प्रचलित प्राकृतिक शिक्षण विधियों के अनुरूप है।

मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधान

NEP 2020 के खण्ड 4.11 से 4.22 में मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधान किया गया है। इसके अनुसार कक्षा 5 तक (अधिमानतः कक्षा 8 तक) मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा दी जाएगी। संस्कृत को वैकल्पिक विषय के रूप में बढ़ावा दिया जाएगा, जबकि अन्य शास्त्रीय भाषाओं (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उड़िया) को भी प्रोत्साहित किया जाएगा।

प्राचीन काल में पाणिनि ने संस्कृत व्याकरण लिखा, किन्तु उन्होंने प्राकृत और अपभ्रंश को भी मान्यता दी। बौद्ध ग्रंथ पालि में लिखे गए, जैन ग्रंथ प्राकृत और शौरसेनी में लिखे गए। बहुभाषिकता भारत की पहचान थी, और यही NEP 2020 का भी लक्ष्य है। हालाँकि, इस प्रावधान के क्रियान्वयन में बड़ी चुनौती यह है कि चिकित्सा, अभियांत्रिकी, विधि जैसे क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकें हिंदी, तमिल, तेलुगु, मराठी, बांग्ला आदि भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं। वैज्ञानिक शब्दावली का स्थानीय भाषाओं में मानकीकृत अनुवाद अभी तैयार नहीं है। उदाहरण के लिए, 'क्वांटम एंगलमेंट', 'स्टेम सेल डिफरेंशिएशन', 'एल्गोरिदमिक बायस' जैसे शब्दों का हिंदी में मानक अनुवाद क्या होगा – यह अभी स्पष्ट नहीं है। यह एक अरब डॉलर का उद्योग बन सकता है, जिसमें पाठ्यपुस्तकों का अनुवाद और स्थानीय शब्दावली का निर्माण शामिल है।

बहु-विषयकता और लचीलापन

NEP 2020 में प्रावधान है कि कला, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी के बीच कोई सख्त विभाजन नहीं होगा। कोर्सेज की पसंद, मेजर-माइनर और एबीसी (अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट) की व्यवस्था होगी। छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकेंगे, और क्रेडिट संचय कर सकेंगे। इसका प्राचीन उदाहरण चाणक्य (कौटिल्य) हैं, जो अर्थशास्त्र के रचयिता होते हुए भी राजनीति, युद्धनीति, अर्थ, नीति, ज्योतिष – सब पढ़ा था। नालन्दा में छात्र व्याकरण, चिकित्सा, दर्शन और तर्कशास्त्र एक साथ पढ़ते थे। AI के युग में बहु-विषयकता और भी अधिक आवश्यक हो गई है। एक कंप्यूटर इंजीनियर को नैतिक AI के लिए दर्शन की आवश्यकता है, और एक अर्थशास्त्री को नीति निर्माण के लिए इतिहास की। अतः बहु-विषयकता केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि भविष्य की अनिवार्यता है।

मूल्य शिक्षा और योग



NEP 2020 में मूल्य शिक्षा के अंतर्गत नैतिक, नागरिक, पर्यावरण, लैंगिक समानता, सहानुभूति, सत्यनिष्ठा, सेवा-भाव पर पाठ्यक्रम का प्रावधान है। इसका प्राचीन आधार यम-नियम (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) तथा गुण (दया, क्षमा, धैर्य) हैं। योग, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के प्रावधान के अनुसार योग, खेल, फिटनेस, स्वास्थ्य-शिक्षा को पाठ्यक्रम का भाग बनाया गया है। प्राचीन आधार पतंजलि योगसूत्र के 8 अंग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) तथा आयुर्वेद में वर्णित दिनचर्या और ऋतुचर्या हैं।

विडम्बना यह है कि भारत के प्राइवेट स्कूलों में 'मोरल साइंस' की पुस्तकें अंग्रेजी में होती हैं, जिनमें 'बी पंचुअल', 'शेयर योर टॉय' जैसे सरसरी उपदेश होते हैं। इन पुस्तकों में भारतीय नैतिक परंपरा – जैसे कि 'सत्यमेव जयते', 'सेवा परमो धर्मः', 'वसुधैव कुटुम्बकम्' – का कोई उल्लेख नहीं होता। NEP 2020 में गहन मूल्य-शिक्षा की आवश्यकता पर बल है, किन्तु शिक्षकों को इसका प्रशिक्षण नहीं दिया गया है। केवल पाठ्यपुस्तक में एक अध्याय जोड़ देने से मूल्य शिक्षा नहीं आ जाती – इसके लिए शिक्षक को स्वयं उन मूल्यों का जीवंत उदाहरण होना चाहिए, जैसा कि प्राचीन गुरुकुलों में होता था।

शिक्षक-प्रशिक्षण

शिक्षक-प्रशिक्षण में NEP 2020 ने 4-वर्षीय एकीकृत B.Ed. का प्रावधान किया है। शिक्षकों की न्यूनतम योग्यता बढ़ाई गई है। राष्ट्रीय शिक्षक पाठ्यचर्या में भारतीय दर्शन, मूल्य, योग, ग्रामीण शिक्षा आदि को शामिल करने का प्रावधान है। प्राचीन मॉडल में गुरु स्वयं ब्रह्मचर्य, ज्ञान, तपस्या से युक्त होता था। 'आचार्य देवो भवः' अर्थात् शिक्षक को देवता का दर्जा दिया जाता था। आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का सम्मान लगातार घटा है। शिक्षकों का वेतन कम है, उन्हें स्वायत्तता नहीं है, और समाज में उनकी स्थिति गिरी है। NEP में शिक्षक को 'मैटर' के रूप में देखा गया है, किन्तु जब तक शिक्षकों के कार्य-स्थितियों और सम्मान में सुधार नहीं होगा, कोई भी नीति सफल नहीं हो सकती।⁶ क्रियान्वयन की चुनौतियाँ (महत्वपूर्ण विस्तार)

5. तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 1: प्राचीन, औपनिवेशिक एवं NEP 2020 मॉडल की तुलना

पैरामीटर	प्राचीन मॉडल (वैदिक/बौद्ध/जैन)	औपनिवेशिक मॉडल (1835–1947)	NEP 2020
लक्ष्य	मोक्ष, चरित्र-निर्माण, समाज-सेवा, ऋणत्रय (देव, ऋषि, पितृ)	प्रशासनिक नियंत्रण, नौकरशाही, 'मुंशी-बाबू' वर्ग	समग्र विकास, राष्ट्रीय मूल्य, SDG 4
शिक्षण विधि	संवाद, शास्त्रार्थ, अनुभवात्मक,	व्याख्यान, रटना, दंड	खोज-आधारित, परियोजना-



	प्रश्नोत्तरी	आधारित	आधारित, अनुभवात्मक
भाषा माध्यम	बहुभाषिक (संस्कृत, प्राकृत, पालि)	अंग्रेजी प्रधान, स्थानीय भाषाएँ उपेक्षित	मातृभाषा + अंग्रेजी + संस्कृत/अन्य भाषाएँ
मूल्यांकन प्रणाली	सतत एवं गठनात्मक, वार्षिक परीक्षा नहीं	वार्षिक परीक्षा, स्मरण आधारित	बहुआयामी (पोर्टफोलियो, प्रोजेक्ट), PARAKH
शिक्षक की स्थिति	सर्वोच्च (गुरु देवो भवः)	सरकारी सेवक, सीमित सम्मान	प्रशिक्षित, सम्मानित (लक्ष्य)
विषय विस्तार	अत्यधिक बहुविषयक	सीमित, भारतीय विषयों का हास	बहुविषयक (IKT + आधुनिक विज्ञान)
विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात	1:10 – 1:15	1:50 – 1:80	लक्ष्य: 1:30

तालिका 2: NEP 2020, IKT संबंध एवं क्रियान्वयन (2024–26)

NEP 2020 प्रावधान	IKT से संबंध	प्राचीन उदाहरण	क्रियान्वयन स्थिति (2024–26)	चुनौतियाँ
मातृभाषा में शिक्षा	प्राचीन भाषाई परंपरा	पाणिनि, बौद्ध ग्रंथ	18 राज्यों में 25 इंजीनियरिंग कॉलेज	तकनीकी शब्दावली, शिक्षक कमी
बहु-विषयकता	नालंदा, तक्षशिला मॉडल	चाणक्य, सुश्रुत	100+ HEIs में ABC लागू	संकाय की कमी
मूल्य शिक्षा	यम-नियम, नीति ग्रंथ	विदुर नीति, जातक कथाएँ	NCERT पाठ्यक्रम (2026 लक्ष्य)	शिक्षक प्रशिक्षण
शिक्षक-प्रशिक्षण	गुरु परंपरा	गुरुकल्प परंपरा	ITEP 50 विश्वविद्यालयों में	बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण
राष्ट्रीय शिक्षा आयोग	विद्वत् परिषद परंपरा	पाणिनि, याज्ञवल्क्य	HECI प्रस्तावित	राजनीतिक बाधाएँ
IKT समावेशन	64 कलाएँ	कला, शिल्प, विज्ञान	UGC ने IKT कोर्स अनिवार्य किया	संतुलन एवं समावेशन

तालिका 3: अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा मॉडल तुलना

पैरामीटर	भारत (NEP 2020)	फिनलैंड	जापान	ऑस्ट्रेलिया	OECD औसत
शिक्षा पर GDP %	6% (लक्ष्य), वर्तमान 2.8-3%	5.5-6%	3.2-3.5%	5-5.5%	4.9%
विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात	1:30 / 1:25	1:12 / 1:9	1:16 / 1:11	1:14 / 1:12	1:13
प्रारंभिक शिक्षा आयु	3 वर्ष	7 वर्ष	6 वर्ष	5 वर्ष	5-6 वर्ष
मूल्यांकन प्रणाली	गठनात्मक + योगात्मक	केवल गठनात्मक	उच्च दबाव परीक्षाएँ	NAPLAN	मिश्रित
बहु-विषयकता	उच्च (लक्ष्य)	बहुत उच्च	मध्यम	उच्च	उच्च
स्थानीय ज्ञान समावेश	उच्च (IKT)	मध्यम	उच्च	उच्च	मध्यम
शिक्षक सम्मान	निम्न → उच्च (लक्ष्य)	बहुत उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

6. क्रियान्वयन की चुनौतियाँ (Implementation Challenges)

6.1 बजट की कमी

NEP के अनुसार शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 6% व्यय होना चाहिए। वर्तमान में यह लगभग 2.8-3% है। बिना पर्याप्त बजट के नए पाठ्यक्रम नहीं बन सकते, शिक्षकों का 4-वर्षीय प्रशिक्षण संभव नहीं है, और विद्यालयों में इन्फ्रास्ट्रक्चर (प्रयोगशाला, खेल मैदान, योग स्टूडियो) नहीं बन सकते। यदि भारत को NEP 2020 को पूर्ण रूप से क्रियान्वित करना है, तो उसे शिक्षा बजट कम से कम दोगुना करना होगा। तुलना के लिए, चीन 2020 में शिक्षा पर GDP का 4.5% खर्च करता था, और आज यह बढ़कर 5% से अधिक हो गया है।

6.2 शिक्षकों की तैयारी

आज 50 लाख से अधिक शिक्षक हैं, जिनमें से अधिकांश रटंत-पद्धति के अभ्यस्त हैं। उन्हें प्रोजेक्ट-बेस्ड, खोज-आधारित, बहु-विषयक शिक्षण सिखाने के लिए 5-7 वर्ष का निरंतर प्रशिक्षण आवश्यक है। अकेले IKT को पढ़ाने के लिए ही शिक्षकों को वेदों, उपनिषदों, बौद्ध और जैन दर्शन, योग, आयुर्वेद का बुनियादी ज्ञान देना होगा – जो एक विशाल कार्य है।



6.3 भाषा का व्यावहारिक संकट

वैज्ञानिक शब्दावली का अभाव एक बड़ी समस्या है। हिंदी, तमिल, तेलुगु में 'क्वांटम एंगलमेंट', 'स्टेम सेल डिफरेंशिएशन', 'एल्गोरिदमिक बायस' जैसे शब्दों के मानक अनुवाद उपलब्ध नहीं हैं। साथ ही, शोध की भाषा: विश्व के 90% से अधिक शोध पत्र अंग्रेजी में हैं। यदि हम पूर्णतः मातृभाषा में शिक्षा देने लगे, तो क्या हमारे छात्र वैश्विक शोध से कट जाएँगे? इसका समाधान द्विभाषिक शिक्षा हो सकता है – मातृभाषा में अवधारणा की व्याख्या, और अंग्रेजी में पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग।

6.4 'भारतीय ज्ञान परंपरा' के नाम पर कट्टरता का खतरा

यदि IKT को केवल हिंदू-वैदिक परंपरा तक सीमित कर दिया गया, तो बौद्ध, जैन, सिख, सूफी, आदिवासी ज्ञान-परंपराएँ उपेक्षित रह जाएँगी। 'गोल्डन बर्ड' (स्वर्णिम भारत) का एकांगी चित्रण छात्रों में अतीत के प्रति अवैज्ञानिक मोह पैदा कर सकता है, जबकि प्राचीन भारत में भी दासप्रथा, जातिगत भेदभाव, अछूत जैसी बुराइयाँ थीं। आवश्यक है कि IKT का अध्ययन समीक्षात्मक दृष्टि के साथ किया जाए – अच्छे को ग्रहण करें, बुरे को त्यागें। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था – "हमें वह सब ग्रहण करना चाहिए जो अच्छा है, चाहे वह कहीं से भी आए, और जो बुरा है उसे अस्वीकार करना चाहिए, चाहे वह अपना ही क्यों न हो।"

6.5 परीक्षा का मनोविज्ञान

भारतीय अभिभावक और छात्र परीक्षा-उन्माद के गुलाम हैं। NEP के नए मूल्यांकन (पोर्टफोलियो, प्रोजेक्ट) को स्वीकार करने में समय लगेगा। चीन और फिनलैंड जैसे देशों ने परीक्षा सुधार में 20-25 वर्ष लगाए। भारत को धैर्य रखना होगा। इसके लिए अभिभावकों की काउंसलिंग, मीडिया में जागरूकता अभियान, और क्रमिक परिवर्तन की रणनीति अपनानी होगी।

7. सुझाव एवं नीति-परक सिफारिशें (Suggestions and Policy Recommendations)

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत हैं:

पहली सिफारिश – राष्ट्रीय गुरु-फेलोशिप कार्यक्रम आरंभ किया जाए। सेवानिवृत्त विद्वानों और योग-आयुर्वेदाचार्यों को विद्यालयों में 'आवासीय गुरु' के रूप में नियुक्त किया जाए, जो छात्रों के साथ रहकर मूल्य, योग, नीति-शास्त्र सिखाएँ।

दूसरी सिफारिश – एक समर्पित 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुवाद प्राधिकरण' (National Educational Translation Authority) का गठन किया जाए। यह निकाय सभी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक, तकनीकी, चिकित्सा



पाठ्यपुस्तकों का मानकीकृत अनुवाद तैयार करे। इस कार्य के लिए 1,000 करोड़ रुपये का विशेष बजट आवंटित किया जाए।

तीसरी सिफारिश – प्राचीन विद्यापीठों का पुनरुद्धार किया जाए। तक्षशिला, नालंदा (पहले से ही प्रयास चल रहा है), विक्रमशिला, वल्लभी के मॉडल पर नए 'बहु-विषयक विश्वविद्यालय' स्थापित हों, जहाँ IKT के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान पढ़ाया जाए।

चौथी सिफारिश – शिक्षकों के लिए 'पुनश्चर्या यात्रा' कार्यक्रम आयोजित किया जाए। प्रत्येक शिक्षक को अपने क्षेत्र के किसी गुरुकुल या मठ में 15 दिन का आवासीय प्रशिक्षण (भारतीय दर्शन, शास्त्रार्थ विधि, मूल्य शिक्षण) दिया जाए। इस प्रशिक्षण को सेवाकाल के दौरान प्रति 3 वर्ष में अनिवार्य किया जाए।

पाँचवीं सिफारिश – स्थानीय ज्ञान को पाठ्यक्रम में अनिवार्य बनाया जाए। उदाहरण के लिए, केरल में 'कलारीपयट्टू', असम में 'माजुली की मिट्टी कला', ओडिशा में 'पट्टचित्र', राजस्थान में 'थार रेगिस्तानी ज्ञान' जैसे स्थानीय ज्ञान को कक्षा 6-10 में अनिवार्य विषय बनाया जाए।

छठी सिफारिश – परीक्षा में केवल ज्ञान का मूल्यांकन न हो, बल्कि छात्र के सहयोग, ईमानदारी, सहानुभूति, सेवा-कार्यों का भी 'आचरण स्कोर' बनाया जाए। यह ठीक उसी प्रकार हो जैसे भारतीय सेना में 'ऑल राउंडर' का मूल्यांकन होता है – जहाँ अकेले शारीरिक क्षमता या ज्ञान से काम नहीं चलता, बल्कि चरित्र, टीमवर्क और नैतिकता का भी मूल्यांकन होता है।

सातवीं सिफारिश – शिक्षा बजट को धीरे-धीरे GDP के 6% तक पहुँचाने के लिए एक स्पष्ट समय-सारिणी बनाई जाए। प्रति वर्ष 0.5% की वृद्धि करते हुए 2026 तक 5% और 2030 तक 6% का लक्ष्य रखा जाए।

8. निष्कर्ष(Conclusion)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 न केवल एक शैक्षिक दस्तावेज है, बल्कि यह एक सभ्यतागत आत्म-विश्वास का घोषणापत्र है। यह उस दीर्घकालीन मानसिक गुलामी को तोड़ने का प्रयास है, जिसे मैकाले ने 1835 में स्थापित किया था। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा के उन स्तंभों को पुनः स्थापित करती है जो पिछले 200 वर्षों से उपेक्षित थे – मातृभाषा में शिक्षा, बहु-विषयकता, मूल्य-चरित्र का महत्व, गुरु-शिष्य की गहरी सम्बद्धता, और शिक्षा को जीवन-मुक्ति का माध्यम बनाने का दर्शन।



हालाँकि, केवल नीति लिख देना पर्याप्त नहीं है। भारत जैसे विशाल, विविध और असमान देश में इसका क्रियान्वयन एक दशकों का अभियान होगा। सबसे बड़ी चुनौती शिक्षकों की मानसिकता बदलना, अभिभावकों का परीक्षा-दबाव कम करना, राज्य सरकारों का बजट देना, और IKT को कट्टरता के बिना, समीक्षात्मक बुद्धि के साथ पढ़ाना है।

यदि यह नीति सफल होती है, तो 2047 में (भारत की शताब्दी स्वतंत्रता) हम न केवल आर्थिक रूप से, बल्कि बौद्धिक, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से आत्मनिर्भर राष्ट्र बनेंगे। हमारे छात्र न केवल IIT या आईआईएम में सफल होंगे, बल्कि वे मानवीय मूल्यों, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, बहुभाषिक क्षमता और वैश्विक नागरिकता के साथ विश्व में भारत का नाम रोशन करेंगे। यही भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी देन है – "वसुधैव कुटुम्बकम्" को शिक्षा के माध्यम से साकार करना।

9. संदर्भ सूची (Reference)

1. ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 89, मन्त्र 1
2. छान्दोग्य उपनिषद्, अध्याय 7 (सनत्कुमार-नारद संवाद)
3. पतंजलि योगसूत्र, पाद 2 एवं 3
4. शुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान
5. त्रिपिटक (विनय पिटक, अभिधम्म पिटक)
6. आचारांग सूत्र
7. कौटिल्य अर्थशास्त्र, अध्याय 1-3
8. हवेन-त्सांग, यात्रा-वृत्तांत (नालंदा)
9. The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth Century, Other India Press, 2000
10. Sarvepalli Radhakrishnan, Indian Philosophy (Vol. I & II), Oxford University Press, 1923
11. Indian Knowledge Tradition and NEP 2020, Aayu Publications, 2021
12. Romila Thapar, The Past Before Us, Harvard University Press, 2013
13. Amartya Sen, The Argumentative Indian, Penguin Books, 2005
14. National Education Policy 2020, भारत सरकार



15. NCERT, Position Paper on Indian Knowledge Systems, 2022
16. UGC, Academic Bank of Credits Guidelines, 2021/2024
17. NCTE, National Curriculum Framework for Teacher Education, 2024
18. AICTE, Mother Tongue Education Report, 2025
19. NITI Aayog, NEP 2020 Mid-Term Review, 2025
20. ASER, Pratham Foundation, 2022
21. Kumar, K. (2020), Colonial Legacy and NEP 2020, Economic and Political Weekly
22. NCERT, National Curriculum Framework (Foundational Stage), 2022
23. UGC, Multidisciplinary Education Report, 2025
24. OECD, Education at a Glance 2024
25. UNESCO, Global Education Monitoring Report 2024/25
26. Finland Ministry of Education, Core Curriculum 2014 (Updated 2024)
27. MEXT, Course of Study 2017 (Revised 2023)
28. PISA Results 2022